477वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 40 | दशम् अंक | मई 2018

इस अंक में...

11 बिखरो मत निखरो
12 राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
32 राज्य समाचार
37 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
42 नवीनतम सामान्य ज्ञान
46 खेलकूद
51 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
53 स्मरणीय तथ्य
55 विश्व परिदृश्य
59 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं
63 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
66 फोकस—भारतीय चुनाव प्रणाली
71 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
75 आर्थिक लेख—विश्व बैंक की कारोबारी सुगमता रिपोर्ट 2018 : सर्वांगीण विकास के क्षेत्र में भारतीय अर्थव्यवस्था के बढ़ते कदमों का परिदृश्य
77 संवैधानिक लेख—भारतीय संविधान की मुख्य विशेषताएं
79 समसामयिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध लेख—विश्व व्यापार संगठन की नई चुनौतियाँ तथा भारत की भूमिका
83 राजनीतिक लेख—भारतीय दलीय व्यवस्था में उभरती नवीन प्रवृत्तियाँ
86 सामयिक लेख—राज्यों के लिए अलग झण्डे का विचार कितना उचित ?
88 शिक्षा लेख—स्वातंत्र्योत्तर काल में स्त्री-शिक्षा के विकास हेतु प्रयास
91 पर्यटन लेख—दीर्घकालिक विकास का वाहक है पर्यटन उद्योग
93 प्रतिरक्षा लेख—भारत द्वारा विकसित सटीक इंटरसेप्टर मिसाइल
94 कृषि लेख—फसलों की उत्पादकता एवं खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता बढ़ाने में फर्टीफिकेशन तथा फर्टी-फोर्टिफिकेशन की अहम् भूमिका—एक दृष्टि में
96 स्वास्थ्य लेख—स्वच्छ जल, स्वच्छ भारत
99 सार संग्रह
104 सामान्य अध्ययन—(i) मध्य प्रदेश पीएससी (प्रा.) परीक्षा, 2018
109 (ii) उत्तराखण्ड राज्य पात्रता परीक्षा, 2017
113 (iii) आगामी सिविल सर्विसेज एवं राज्य लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
128 समसामयिक आर्थिक एवं वाणिज्यिक बहुविकल्पीय प्रश्न
130 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
134 ऐच्छिक विषय—(i) भूगोल-यू.जी.सी.-नेट/जे. आर. एफ. परीक्षा, 2017
141 (ii) शारीरिक शिक्षा—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
150 (iii) विज्ञान विषय—हरियाणा शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2017
154 सामान्य जानकारी—पशुपालन, डेयरिंग एवं मत्स्यकी क्षेत्र में अनुसंधान, विकास और सामाजिक-आर्थिक वृद्धि के बढ़ते चरण—एक दृष्टि में
157 तर्कशक्ति (i) आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक ऑफीसर्स (प्रा.) परीक्षा, 2017
160 (ii) जी.आई.सी. अधिकारी परीक्षा, 2017
162 गणितीय अभियोग्यता—(i) ओ.आई.सी. (ए.ओ.) प्रारम्भिक परीक्षा, 2017
166 (ii) नाबार्ड ऑफीसर्स ग्रेड-A परीक्षा, 2017
168 क्या आप जानते हैं ?
169 अपना ज्ञान बढ़ाइए
170 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता असीमित
172 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—क्या वातावरण की कीमत पर विकास सम्भव है ?
176 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-466 का परिणाम
177 रोजगार समाचार

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

बिखरो मत निखरो

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

जैसे कोई पक्षी को चुग्गा डालता है तो जगह-जगह दाने बिखेरता जाता है. कहीं आप भी अपने मन को चुग्गा डालने के लिए उसे जगह-जगह बिखेर तो नहीं रहे ? जब जिससे मिलते हो, जिस भी विषयवस्तु से आकर्षित होते हो, जिस किसी व्यक्ति से प्रभावित होते हों, उस पर अपना मन लुटा बैठते हो. मन दे कर यानि कुछ चित्ति कणों को नहीं छोड़कर आप आगे बढ़ जाते हो. आपकी देह तो आगे चली जाती है, किन्तु ये बिखरे चित्ति कण आपकी आज्ञावश उन स्थानों पर अटके रहते हैं और फिर वे छिपकली की कटी पूँछ की तरह तड़पते हैं और पुनः मूल मन में समाहित होने तक मन को भी बेचैन करते रहते हैं. आपकी बेचैनी का राज यही है कि आप बिखरे-बिखरे हो. आत्मज्ञानी श्री विराट गुरुजी रचित गीतिका के आरम्भिक दो पद देखें—

टुकड़ा-टुकड़ा सोच हमारा,
बिखरा-बिखरा ज्ञान रे।
सत्गुरुवर की किरपा उतरे,
तो होवे निज भान रे।।

हमारी सोच भी टूटी-फूटी और जानकारियाँ भी आधी-अधूरी. इस तरह हमारी मानसिक शक्तियाँ कमजोर हो चुकी हैं. हम किसी एक विषयवस्तु पर समग्र रूप से ध्यान लगा ही नहीं पाते हैं और यह समग्रता का अभाव हमारी असफलता का कारण बन जाता है. क्या हम अपने चित्तों को बिखरने से बचा सकते हैं ? उत्तर होगा हाँ! अवश्य बचा सकते हैं, किन्तु इसके लिए हमें अपने मन को अनुशासित करना सीखना होगा. मनोनुशासन की प्रक्रिया में उतरने के लिए कुछ बातों का अभ्यास जरूरी है, जैसे—(A) जो अच्छा लगे उसे अपना बनाने की, हस्तगत करने की कोशिश मत करो. मात्र उसके गुणों को सराहें और आगे बढ़ जाएं.

अगर आप गुणदर्शी हो, गुणों के प्रशंसक हो और उन्हें अपने अधिकार में रखने की कामना से मुक्त हो, तो वे गुण स्वतः आपमें निखरेंगे और आपको उन गुणों के लिए बिखरने की जरूरत नहीं पड़ेगी. जैसे किसी का गाना पसंद आया, मन को रुचिकर लगा, तो आप उसकी तारीफ भले करो, किन्तु अपने मन में उस गाने की कला के प्रति दीवानगी पैदा करके अथवा गाने वाले के प्रति दीवानापन लाकर, उसको अपना बनाने की चेष्टा या फिदा हो जाने वाली सोच मत लाओ.

निकम्मे बनकर परेशान होना मंजूर न हो तो स्वयं को बिखरने मत दो. अपना चित्त वहीं छोड़कर मत जाओ. मात्र दृष्टि में प्रेम भरकर गुणों का, कला का आनंद लो और उसके गुणों की तारीफ करके, उसकी हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करके आगे बढ़ जाओ, आप निखरते जाओगे.